LEARN TO LEAD

ESTD. 2001

# STEPPING STONE SCHOOL (HIGH)

**Subject: 2nd language (Hindi)**

**Topic: Prose**

**Class: VI**

**Date: 29/05/2020**

**Time : 30 minutes**

**Worksheet no: 13**

**दिए गए पाठ को ध्यानपूर्वक पढ़िए और इसके अर्थ को अच्छे से समझने का प्रयास कीजिए**

## 2 जंगल और आदमी

धरती प्रकृति की अनुपम कृति है। इस वसुधा पर जन्म लेने वाले प्रत्येक प्राणी का समान रूप से इस पर अधिकार है। प्रकृति ने स्वतंत्र रूप से सभी के लिए सब कुछ उपलब्ध कराया है। अतः हमें बेज़ुबान जानवरों, पशु-पक्षियों और परोपकारी प्रकृति को विनष्ट करने का अधिकार नहीं है।

जंगल में चारों ओर हरियाली थी। ठंडी-ठंडी हवाएँ बह रही थीं। पशु-पक्षी अपनी मस्ती में इधर-उधर घूम रहे थे। हर तरफ़ सुख और आनंद का वातावरण छाया था।

अचानक जंगल में भगदड़ मच गई। हवाएँ थम गईं। पशु-पक्षियों के झुंड बेतहाशा इधर-उधर भागने लगे, मानो जंगल में भूकंप आ गया हो। चारों ओर दहशत और घबराहट का वातावरण छा गया था।

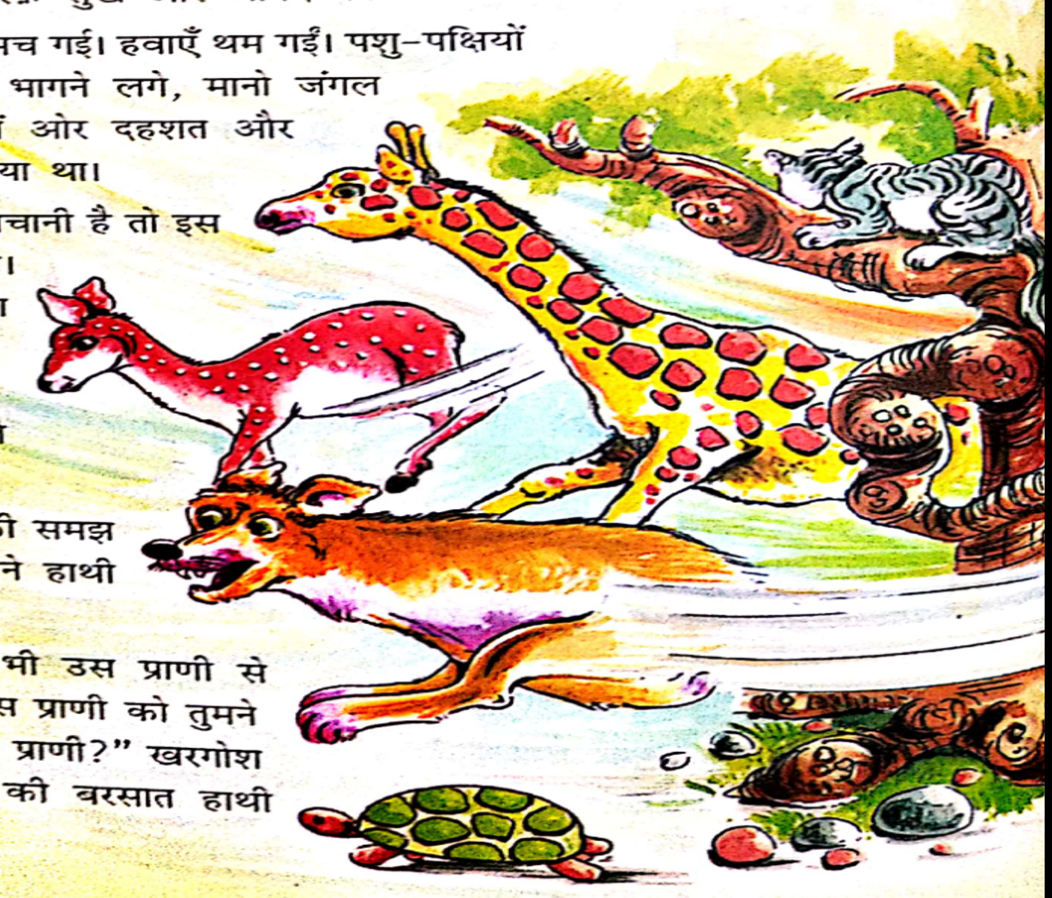

"ओ खरगोश, यदि जान बचानी है तो इस जंगल से कहीं दूर भाग चलो। जंगल में एक अजीब-सा प्राणी घुस आया है जो जंगल के राजा शेर से भी अधिक खतरनाक है," भालू ने हाँफते हुए कहा।

भालू की बात खरगोश की समझ से परे थी लेकिन तभी उसने हाथी को भागते हुए देखा।

"हाथी दादा! क्या तुम भी उस प्राणी से डरकर भाग रहे हो? क्या उस प्राणी को तुमने देखा है? कैसा लगता है वह प्राणी?" खरगोश ने एक साथ कई सवालों की बरसात हाथी दादा पर कर डाली।



Scanned with CamScanner

हाथी गुस्से में झुँझलाते हुए बोला, "लगता है, तुझे अपनी जान प्यारी नहीं है जो इस तरह के बेकार सवाल कर रहा है। क्या तुझे उस प्राणी के आने की आवाज़ सुनाई नहीं दे रही?"

तभी जंगल में एक विचित्र प्राणी ने प्रवेश किया, जिसके दो हाथ, दो पैर, चेहरे पर डरावनी बड़ी-बड़ी मूँछें, कंधे पर लंबी-सी दो नलीदार कोई वस्तु, एक हाथ में रस्सी और दूसरे में कुल्हाड़ी... आखिर कौन था यह प्राणी?

यह विचित्र प्राणी था 'आदमी', जिसने आज पहली बार जंगल में कदम रखा था।

"माँ, यह कौन है?" चीतल के मासूम बच्चे ने अपनी माँ से पूछा।

"श... श... श! इस प्राणी को आदमी कहते हैं।"

चीतल ने धीरे से अपने बच्चे को पुचकारते हुए कहा।

तभी जंगल और जानवरों की तबाही का सिलसिला आरंभ हुआ। सैकड़ों बेज़बान, मासूम जानवरों को चंद सिक्कों के लालच में मार दिया गया।

आदमी ने हरे-भरे पेड़ों को काटकर दूर-दूर तक अपनी बस्तियाँ बना डालीं। अपनी सुविधाओं के लिए ज़मीन को समतल कर डाला। इस तरह वह अजीब प्राणी 'आदमी' अपनी आबादी बढ़ाने और उसे जंगल में बसाने के लिए जुट गया।



Scanned with CamScanner

पाठ के प्रस्तुत अंश में लेखक यह बता रहे हैं कि किस प्रकार मनुष्यों द्वारा प्रकृति को क्षति पहुंचाई गई। धरती पर सभी प्राणी का समान रुप से अधिकार है,पर मनुष्य अपने स्वार्थ के कारण यह समझ नहीं पाता । वह लालचवश हरे-भरे जंगल को नष्ट करता ही है, साथ ही सैंकड़ों बेजुबान, मासूम जानवरों को चंद सिक्कों के लिए मार डालता है।

हरे-भरे पेड़ काट कर मनुष्य जंगल को नष्ट कर देता है,जिससे जानवरों का आश्रय छिन जाता है। ऐसा करने पर आदमी को तनिक भी दुख नहीं होता बल्कि वह अपनी आबादी बढ़ाने में और उसे जंगल में बसाने में जुट जाता है।

Screenshot is taken
Tap to view

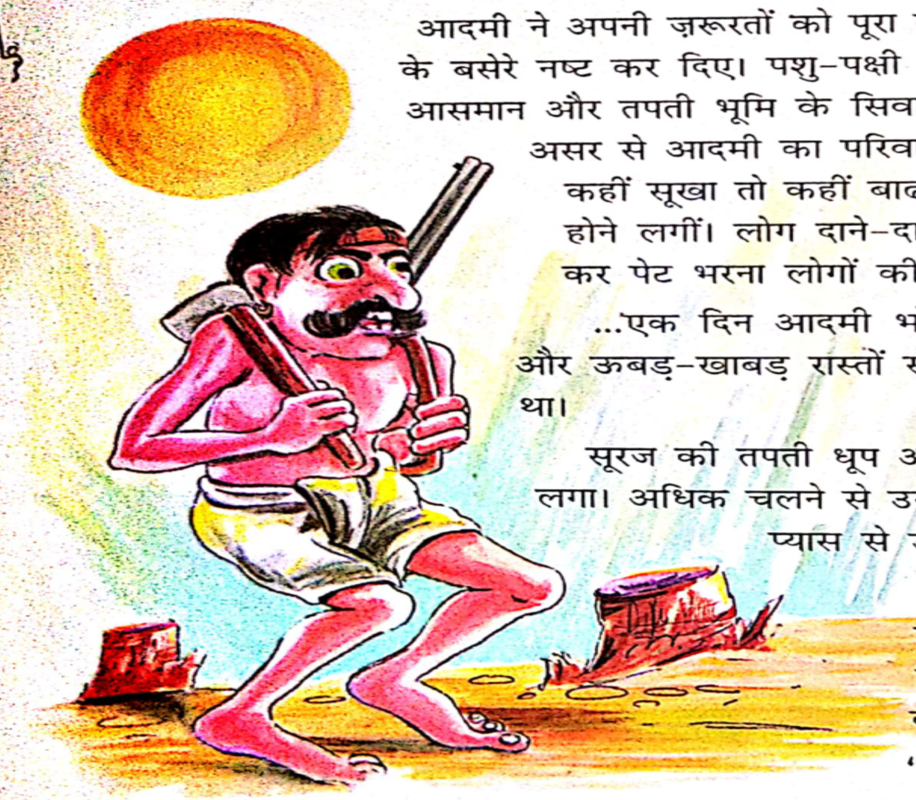

आदमी ने अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए पशु–पक्षियों और जानवरों के बसेरे नष्ट कर दिए। पशु–पक्षी भूखे–प्यासे मरने लगे। चारों ओर खुला आसमान और तपती भूमि के सिवा कुछ भी नहीं बचा था। इस तबाही के असर से आदमी का परिवार भी नहीं बच सका। पेड़ कट जाने से कहीं सूखा तो कहीं बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो गई, फ़सलें नष्ट होने लगीं। लोग दाने–दाने को तरसने लगे, जानवरों का शिकार कर पेट भरना लोगों की मजबूरी हो गई।

...एक दिन आदमी भोजन की तलाश में निकला। तपती धूप और ऊबड़–खाबड़ रास्तों से गुज़रता हुआ वह आगे बढ़ता जा रहा था।

सूरज की तपती धूप और गरम हवाओं से उसका सिर चकराने लगा। अधिक चलने से उसके पैरों की शक्ति जवाब दे चुकी थी। प्यास से उसका गला सूख रहा था।

'काश! इस समय किसी पेड़ की छाया उसे मिल जाती।' यह सोच ही रहा था कि अचानक उसका सिर चकराया और वह ज़मीन पर गिर पड़ा।

"बचाओ... मुझे बचाओ... बचाओ!" की आवाज़ सुनकर आदमी की बेहोशी टूटी। उसने देखा पत्थर से दबा हुआ एक नन्हा पौधा अपनी अंतिम साँसें गिन रहा था।

नन्हे पौधे को देखकर आदमी को अपने पिछले पापों का स्मरण हो आया, जो उसने पिछले कुछ वर्षों में जंगल और जानवरों की तबाही के लिए किए थे। वह अपने किए हुए अपराधों पर शर्मिंदा होने लगा, 'काश! वह ऐसा न करता तो उसे आज यह दिन न देखना पड़ता।' यही सोचते हुए वह बुदबुदाने लगा... "नहीं... नहीं... मैं अब और ऐसा नहीं होने दूँगा... नहीं... नहीं..." और उसने पत्थर के नीचे दबे हुए उस नन्हे पौधे को मिट्टी सहित बड़ी सावधानी से अपने हाथों में उठा लिया।

उस नन्हे पौधे को लेकर वह बड़ी तेज़ी से अपनी बस्ती की ओर बढ़ने लगा। एक हाथ से पौधे को पकड़कर दूसरे हाथ से उसने पौधे के ऊपर छाया कर रखी थी। अब उसमें गजब की फुरती आ चुकी थी। मानो वह अपने अनगिनत पापों का प्रायश्चित करने जा रहा हो।



Scanned with CamScanner

Screenshot is taken
Tap to view

"नत्थू... फत्थू... गंगू... आओ... जल्दी बाहर आओ... देखो आज मैं तुम्हारे लिए क्या लाया हूँ।" और सभी यह सोचकर बाहर आ गए कि शायद बापू के हाथ आज बहुत बड़ा शिकार लगा है, तभी बापू इतनी खुशी से चिल्ला रहे हैं।

...लेकिन यह क्या? बापू के हाथ में भोजन की जगह एक नन्हा-सा पौधा था, जिसे वह बड़ी लगन से ज़मीन में लगा रहे थे।

धीरे-धीरे बिना कुछ कहे बात सबकी समझ में आने लगी और सबने मिलकर एक साथ प्रण किया कि आज के बाद वे न तो कोई हरा-भरा पेड़ काटेंगे और न ही किसी मासूम जानवर को मारेंगे। आज आदमी और उसका परिवार अपने किए पर बहुत ही शर्मिंदा था।

इस प्रकार एक के बाद एक दूसरा पौधा लगाया जाने लगा। धीरे-धीरे वे पौधे पेड़ों में बदल गए और पेड़ हरे-भरे जंगलों में। अब फिर से एक हरा-भरा जंगल लहराने लगा था। फिर वही ठंडी और स्वच्छ हवाएँ बहने लगीं। पशु-पक्षी खुशी से इधर-उधर घूमते दिखाई देने लगे।

—मुकेश नादान

**शब्दार्थ (Word - Meaning)**

**बेतहाशा** — बहुत घबराकर बिना सोचे समझे/बड़ी तेज़ी से
**चीतल** — एक प्रकार का हिरन
**सिलसिला** — क्रम
**बसेरे** — रहने के स्थान/घर
**बुदबुदाने** — अस्फुट शब्द में बोलना/मन ही मन में बोलना
**तबाही** — बरबादी
**समतल** — सपाट
**स्मरण** — याद रखना
**प्रायश्चित** — पश्चाताप



Scanned with CamScanner

**अर्थ**

समय बीतता जाता है और धीरे धीरे करते हुए मनुष्य जंगल को समाप्त कर देता है। जिससे सिर्फ पशु पक्षियों पर बुरा असर नहीं पड़ता बल्कि तबाही के असर से आदमी का परिवार भी नहीं बच सका

जब सूरज की तपती धूप और गर्म हवाएं उसके शरीर को बेबस करने लगी, तब वह पेड़ की ठंडी छाया का आश्रय ढूंढने लगा। पर आश्रय मिलता कहां से? पेड़ तो उसने स्वयं ही नष्ट कर दिए थे। अब उसे पेड़ों का महत्व समझ में आने लगा। इसलिए पत्थर से दबे हुए नन्हे पौधे को देखकर आदमी को अपने पिछले बापू का स्मरण हो आया, जो उसने पिछले कुछ वर्षों में जंगल की तबाही के लिए किए थे। उसे अपनी गलती का एहसास होते ही उसमें पत्थर से दबे हुए नन्हे पौधे को बड़ी सावधानी से मिट्टी सहित उठाकर अपने घर के पास लगाता है। धीरे धीरे वे सर्वत्र छोटे-छोटे पौधे लगाते हैं जो भविष्य में पेड़ों और जंगल में बदल गए। जिससे फिर वही ठंडी और स्वच्छ हवाएं बहने लगी और पशु पक्षी खुशी से इधर-उधर घूमते दिखाई देने लगे।